TANYA
Assistant Professor (Guest Faculty)
Dept of Economics
D. K College, Dumraon
B.A - I, Paper - II
Topic - Secondary Functions of Money.

मुद्रा के गौण कार्यों के अन्तर्गत इसके अपेक्षाकृत कम महत्व के कार्य आते हैं।

ये कार्य समाज के आर्थिक विकास के साथ-साथ दृष्टिगोचर होते हैं।

इन कार्यों की उत्पत्ति भी मुद्रा के प्राथमिक कार्यों से ही होती हैं। इसलिए इन्हें गौण अथवा सहायक या कभी-कभी व्युत्पादित कार्य (Derived Functions) भी कहा जाता हैं।

मुद्रा के गौण कार्य निम्नांकित हैं।—

1. विलम्बित भुगतान का मान
2. मूल्य का संचय तथा
3. क्रय-शक्ति का हस्तांतरण

1. विलम्बित भुगतान का मान (Standard of Deferred Payment)

मुद्रा का पहला गौण कार्य यह है कि यह विलम्बित भुगतान के मान का कार्य करती है। आज के व्यवसाय में साख का सर्वाधिक महत्व है। ऋण के लेन-देन का कार्य मुद्रा के माध्यम से ही होता है। वस्तुओं के रूप में ऋण के लेन-देन के कार्य में कठिनाई होती है। अतएव आज इस कार्य के लिए एक प्रामाणिक वस्तु के रूप में मुद्रा का प्रयोग किया जाता है।

2. मूल्य का संचय (Store of value)

मुद्रा मूल्य अथवा क्रय शक्ति का संचय का भी साधन है।
वस्तु-विनिमय प्रणाली के अंतर्गत मूल्य संचय के साधन का अभाव था जिससे उस समय लोगों को अपनी बचत का संचय वस्तुओं के रूप में ही करना पड़ता था किन्तु इस रूप में मूल्य संचय में बहुत अधिक असुविधा होती है। मुद्रा इस कठिनाई को दूर करता है।

3. क्रय-शक्ति का हस्तांतरण (Transfer of Purchasing Power) -
मुद्रा का एक आवश्यक कार्य क्रय-शक्ति का हस्तांतरण भी है।

वास्तव में विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करने के ही कारण मुद्रा - मूल्य के हस्तांतरण का सर्वोत्तम साधन बन गया है।